1. प्रयोजना विधि → जॉन डीवी , किलपैट्रिक
└ प्रथम प्रयोग - रिचर्ड्स 1900

2. अभिक्रमित अनुदेशन विधि → प्रेणता - B.F स्कीनर
- ज्ञान की विषयवस्तु को छोटे - छोटे पदों में विभाजित कर क्रमबद्ध रूप से तार्किक ढंग से प्रस्तुत करना।

3. पर्यवेक्षित अध्ययन विधि → / स्वाध्याय विधि
- मोरिसन , अमेरिका
- मौन वाचन के लिए उत्तम , छात्र में स्वाध्याय के गुण का विकास
सोपान - 1. नियोजन 2. क्रियान्वयन 3. मूल्यांकन

4. आगमन विधि →
- उदा० की सहायता से किसी सामान्य नियम या सूत्र की स्थापना
- स्थूल से सूक्ष्म , विशिष्ट से सामान्य
- मूर्त से अमूर्त , ज्ञात से अज्ञात

↳ 1. मनोवैज्ञानिक विधि , प्राप्त ज्ञान स्थायी
2. बालक की खोजी प्रवृत्ति को जन्म
3. छोटी कक्षाओं के लिए उपयोगी
] (गुण)

1. समय अधिक लगता
2. अनुभवी , योग्य अध्यापकों की आवश्यकता
3. परिणाम पूर्णतया सत्य नहीं होते
4. छात्र की सीखने की गति धीमी, परिश्रम अधिक
] (दोष)

5. निगमन विधि →
नियम/सूत्र का उदा० में प्रयोग कर उसकी सत्यता की पुष्टि
- नियम से उदा० - प्रमाण से प्रत्यक्ष
- अज्ञात से ज्ञात - सूक्ष्म से स्थूल
- सामान्य से विशिष्ट - अमूर्त से मूर्त

(सोपान) → 1. नियम या सिद्धांत का ज्ञान
2. नियम या सिद्धांत का प्रयोग
3. आँकड़ो के आधार पर परीक्षण
4. सत्यापन

(गुण) →

1. समय व श्रम कम
2. स्मरण शक्ति विकास
3. नवीन समस्याओं का समाधान
4. कार्य अत्यंत सरल, सुविधाजनक
5. अध्यापक कार्य शीघ्रता व आसानी से
6. क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त
7. उच्च कक्षाओं के लिए उपयोगी

(दोष) → 1. मानसिक शक्ति का विकास नहीं, अमनोवैज्ञानिक
2. ज्ञान अस्थायी, अस्पष्ट, रटने की आदत

6. सूत्र विधि →
- संस्कृत साहित्य से उत्पन्न हुई
- निगमन विधि का रूप

7. समवाय विधि →
"मिलना" - जिसमें सभी विषयों का अध्ययन एक साथ कराया जाता है।

8. भाषा संसर्ग विधि →
- केवल भाषा का ज्ञान कराया जाता है।
- व्याकरण के नियमों का ज्ञान कराए बिना भाषा के शुद्ध रूप का अनुकरण
- प्राथमिक कक्षाओं के लिए उत्तम

9. अनौपचारिक (सैनिक) विधि →
- सूत्रपात - अमेरिका, द्वितीय विश्व युद्ध 1945 में सैनिकों द्वारा उत्पन्न
- भाषा के चारों कौशलों का विकास एवं अभ्यास

10. व्याख्यान विधि →
- सबसे प्राचीन विधि
- अध्यापक एक-एक शब्द का अर्थ स्पष्ट करता है और छात्र सामने बैठकर सुनते रहते हैं।
- श्रवण आधारित विधि

11. प्रदर्शन विधि →
- छोटी कक्षाओं के लिए यह विधि अत्यन्त उपयोगी
- मूर्त से अमूर्त , ज्ञान स्थायी , नम रुचिकर ; छात्रों का मानसिक विकास

12. स्मार्ट विधि → H.C. मॉरिसन
- सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को कुछ खंडो में बांटकर इकाइयां बनाई जाती
सोपान - 1. अनुसंधान
2. प्रस्तुतीकरण
3. क्रियान्विति
4. कथन

13. प्रत्यक्ष विधि → श्री गुर्विन (फ्रांस) - 1901 अंग्रेजी भाषा के लिए
- वस्तुओं व जीव-जन्तुओं का चित्र दिखाकर क्रियाओं को करके दिखाना।

14. श्रुत लेखन - अभ्यास विधि → सुनकर लिखना
- यह लेखन की प्राचीन व परम्परागत पद्धति है तथा शुद्ध लेखन की अति उत्तम विधि मानी जाती है।

15. भाषा - प्रयोगशाला विधि → 1965 लॉरेन्स M. स्टॉलुरो , डेनियल डेविस
- इसमें शिक्षक के स्थान पर सम्पूर्ण संगणक यंत्र (कम्प्यूटर) शिक्षण प्रदान करता है।

16. दूरस्थ शिक्षण विधि → दूर बैठकर
- शिक्षक और छात्रों की शारीरिक उपस्थिति के बिना दी जाने वाली शिक्षा है।

17. अनुकरणात्मक विधि →
- अध्यापक सम्पूर्ण कक्षा के सम्मुख छोटे-छोटे पद्य (बाल गीत) का आदर्श पठन करते हैं।
- अनुकरण से बालक सीखता है
- प्रारम्भिक स्तर पर यह लेखन व उच्चारण के लिए सर्वश्रेष्ठ।

18. व्याकरण-अनुवाद विधि → / भण्डारकर विधि
- डॉ. रामकृष्ण भण्डारकर
- अनुवाद के माध्यम से व्याकरण की जानकारी देना

19. द्विभाषी पद्धति → C.J. डोडसन
- यह विधि व्याकरण अनुवाद विधि एवं प्रत्यक्ष विधि दोनों के मध्य सेतु का कार्य करती है।

20. ध्वन्यात्मक विधि → / ध्वनि साम्य विधि
- इसमें ध्वनि की समानता रखने वाले वर्णों को एक साथ सिखाया जाता है।
- धर्म, वर्म, चर्म, मर्म, शर्म
- समान ध्वनि वाले वर्णों को एक साथ वाचन करवाना

21. रसास्वादन विधि → ग्रहण करना
- जब किसी कविता के मूल भाव को छोड़कर केवल शब्दो के रस को ग्रहण किया जाता है।

22. वाचन विधि → बोलना
- अध्यापक विषयवस्तु का वाचन करता है, जिसे आदर्शवाचन कहते हैं, छात्र उसका अनुकरण करता है।

23. साहचर्य विधि → मैडम माण्टेसरी
- वस्तुओं के सामने उनके नाम से कार्ड रखे हुए होते हैं कार्डों को अव्यवस्थित कर दिया जाता है।
बच्चे उन्हें उचित स्थान पर रखते हैं। ,उपयोगी - छोटी कक्षा

24. व्यतिरेकी विधि →
- दो भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन के लिए किया जाता है

26. दल शिक्षण विधि → 1955 जिसीमन व हर्वे
- किसी कक्षा-कक्ष में विशेषज्ञ शिक्षक समूह द्वारा अध्यापन कार्य किया जाता है, तब वह दल शिक्षण विधि के नाम से जाना जाता है।
- सोपान - 1. योजना 2. व्यवस्था 3. मूल्यांकन

26. हरबर्टीय विधि → हरबर्ट
- शिक्षण में क्रमबद्धता रहती है।
- पद - 1. प्रस्तावना 2. प्रस्तुतीकरण 3. तुलना का सहयोग
4. सामान्यीकरण 5. प्रयोग

खेल विधियां →
1. माण्टेसरी विधि - डॉ. मारिया गाण्टेसरी
2. बालोद्यान विधि - फ्रोबेल
3. खेल विधि - हैनरी कॉलडवेल कुक
4. डाल्टन विधि - हेलन पार्कहर्स्ट 1920
5. प्रोजेक्ट का विधि - डॉ. कार्लटन
6. बेसिक शिक्षा विधि - महात्मा गांधी

भाषा-शिक्षण के सूत्र →
1. ज्ञात से अज्ञात
2. सरल से जटिल
3. मूर्त से अमूर्त
4. पूर्ण से अंश
5. विशेष से सामान्य
6. आगमन से निगमन
7. विश्लेषण से संश्लेषण

भाषा - शिक्षण

भाषा →

भाषा शब्द "भाष्" धातु से बना है, जिसका अर्थ कहना। व्यक्त करना होता है।

मानव के द्वारा जिस साधन से विचारों का आदान-प्रदान किया जाता है, वह साधन / माध्यम भाषा है

भाषा के रूप :- (i) मौखिक
(ii) लिखित

→ भाषा का विकास :-

भाषा विकास की मान्यताएँ एवम् सिद्धांत →

1. दैवीय सिद्धांत → (पतंजलि) ईश्वर भाषा के आदिगुरु हैं

2. ध्वन्यात्मक / डिंग-डोंग / लौह तत्व का सिद्धांत → (मैक्समूलर)

पशु-पक्षियों की भाषा → पशु-पक्षियों की स्वतंत्र भाषा होती है तथा वे एक-दूसरे की भाषा को समझ सकते हैं। According to (जीम कॉर्बेट)

→ भाषा के संदर्भ में विभिन्न मत :-

प्लेटो → भाषा हमारी आत्मा की मूक बातचीत है जो कि ध्वनि के रूप में होठों से निकलकर विचार अभिव्यक्त करती है

सीताराम चतुर्वेदी → भाषा के आविर्भाव से सारा संसार गूंगों की विराट बस्ती बनने से बच गया।

दण्डी → तीनो लोक अंधकार में ही आते यदि भाषा रूपी ज्योति प्रदीप्त नही होती।

पतंजलि → भाषा वह व्यापार है, जिससे विचारों का आदान-प्रदान होता है।

किड्सान → भाषा में लिखना और पढ़ना सिखने की बजाय बोलना सिख लेना भाषा की सबसे छोटी पगडंडी को पार कर लेना है।

स्वीट → ध्वन्यात्मक शब्दो द्वारा विचारों का प्रकटीकरण भाषा है

सुमित्रा नंदन पंत → भाषा एक वाङ्मय चित्र है तथा मनुष्य के विवेक तंत की झंकार है

भोलानाथ तिवारी → भाषा हमारे मुख से निस्सृत होने वाला ऐसा ध्वनि समूह है जिसका अध्ययन और विश्लेषण किया जा सकता है।

गुरु कामता प्रसाद → भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरे पर भलि-भांति प्रकट करता है तथा दूसरो के विचार भली प्रकार से ग्रहण करता है

रामचन्द्र वर्मा → भाषा हमारे मुख से उच्चरित होने वाले शब्दों और वाक्यों का ऐसा समूह है जिसके द्वारा मन की बात की जाती है।

बाबूराम सक्सेना → भाषा ध्वनि संकेतो का ऐसा समूह है जिससे मनुष्य विचार विनिमय करता है।

मैक्समूलर → भाषा अगर ईश्वर की देन है तो निःसन्देह ईश्वर की श्रेष्ठ कृति है क्योंकि भाषा हमारे विचारों की जननी है

क्रोचे → उच्चरित व सीमित ध्वनि संगठन ही भाषा है

बाबू श्यामसुंदर दास → ध्वन्यात्मक शब्दों का व्यवहार ही भाषा है

चॉमस्की → भाषा सिखने की क्षमता जन्मजात होती है।

वाइगोत्स्की → भाषा का अस्तित्व और विकास समाज के बाहर संभव नहीं है।
भाषा हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश का अभिन्न अंग है।

स्कीनर → भाषा अनुकरण से सीखी जाती है।

* भाषा सीखने के लिए भाषा का समृद्ध परिवेश आवश्यक है

1. एक बालक को जन्म से 10 वर्ष तक एकांत में रखा गया (समाज से दूर), क्या उसमे भाषा का विकास होगा ?
→ केवल ध्वनियां विकसित होगी

2. एक बालक के जन्म लेते ही उसके माता - पिता की मृत्यु हो जाती है क्या उसकी भाषा का विकास प्रभावित होगा ?
→ नहीं

Q- क्या निरक्षर व्यक्ति को नई भाषा का ज्ञान करवाया जा सकता ? → हां (केवल मौखिक)

भाषा की विशेषताएं →

1. भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है
2. भाषा एक अर्जित सम्पत्ति है पैतृक नहीं, जिसका अर्जन और अधिगम होता है।
3. सामाजिक संबंधो का आधार भाषा है
4. भाषा परिवर्तनशील होती। (लचीलापन)
5. भाषा एक आजीवन प्रक्रिया
(प्रारंभ अंत पता ना हो)

भाषा सीखने के सोपान → जिज्ञासा, प्रयत्न, अनुकरण, अभ्यास

अभ्यास ↓ भाषा सीखने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सोपान

जिज्ञासा ↓ भाषा सीखने का प्राथमिक सोपान (पद)

भाषा विकास की अवस्थाएं →

1. प्रयत्न की अवस्था → (1 वर्ष / 12 माह)

0-3 माह → भाषा का अंश नहीं (भूख व दर्द को रोकर)
3-6 माह → आनंद अभिव्यक्ति
6-10 माह → प्रथम ध्वनि का विकास (मा)
10-12 माह → प्रथम शब्द का उच्चारण

A- क्या निरक्षर व्यक्ति को नई भाषा का ज्ञान करवाया जा सकता ? → हां (केवल मौखिक)

भाषा की विशेषताएं →

1. भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है
2. भाषा एक अर्जित सम्पत्ति है पैतृक नही, जिसका अर्जन और अधिगम होता है।
3. सामाजिक सबंधो का आधार भाषा है
4. भाषा परिवर्तनशील होती। (लचीलापन)
5. भाषा एक आजीवन प्रक्रिया
(प्रारंभ अंत पता ना हो)

भाषा सिखने के सोपान → जिज्ञासा, प्रयत्न, अनुकरण, अभ्यास

अभ्यास ↓ भाषा सिखने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सोपान

जिज्ञासा ↓ भाषा सिखने का प्राथमिक सोपान (पद)

भाषा विकास की अवस्थाएं →

1. प्रयत्न की अवस्था → (1 वर्ष / 12 माह)

0-3 माह → भाषा का अंश नही (भूख व दर्द को रोककर)
3-6 माह → आनंद अभिव्यक्ति
6-10 माह → प्रथम ध्वनि का विकास (मा)
10-12 माह → प्रथम शब्द का उच्चारण

2. अनुकरण की अवस्था → (2½) वर्ष

एक बालक वाक्यांश बोलने लगता है - (1-5 शब्द)

3. मूर्त-अमूर्त की अवस्था → (3½) वर्ष

कल्पना विकास की आयु

अपनी जरूरत के वाक्य स्वतंत्र बोलता है

4. अभिव्यक्ति की अवस्था → (5 वर्ष)

- विद्यालय प्रारंभ की आयु (2100-2500 शब्द)
- इस अवस्था में बालक औपचारिक भाषा भी बोल लेता है

:- भाषा के कौशल :-

भाषा के 4 कौशल होते हैं-

श्रवण, मौखिक, पठन (वाचन), लेखन

भाषा कौशल के 2 प्रकार होते हैं-

अभिव्यक्ति कौशल
- मौखिक (प्रधान कौशल)
- लेखन

कौशल
- श्रवण कौशल (आधारकौशल)
- पठन कौशल

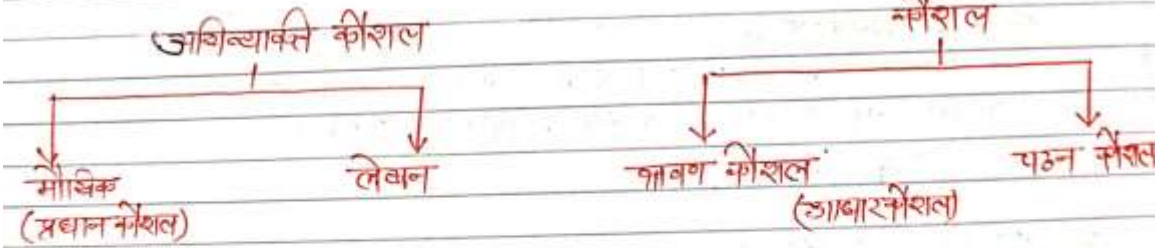

: भाषा का स्वरूप :-

1. मातृभाषा →

जिस प्रकार बालक के शारीरिक विकास हेतु माँ का दूध जरूरी है उसी प्रकार मानसिक विकास हेतु मातृभाषा का होना जरूरी है - महात्मा गाँधी

मातृभाषा में सीखना बालक का जन्मसिद्ध अधिकार - रविन्द्रनाथ टैगोर

2. राजभाषा →

वह भाषा जिसमें सरकारी कार्य सम्पन्न होता है
हिन्दी को राजभाषा घोषित - 14 September 1949

343(i) - राजभाषा हिंदी / सहायक - अंग्रेजी
- देवनागरी लिपि / अंको का रूप अंतरराष्ट्रीय मान्य

7 June 1955 को राजभाषा आयोग का गठन
(अध्यक्ष) - बी.जी. खेर

3. राष्ट्रभाषा →

किसी भी देश की $\frac{2}{3}$ जनता द्वारा बोली - लिखी जाने वाली भाषा

:- भाषा शिक्षण के उद्देश्य :-

→ किसी भी कार्य की सफलता निर्धारित उद्देश्यों पर निर्भर करती है अर्थात् कोई भी कार्य तभी सफल हो सकता है जो उसके उद्देश्य स्पष्ट हो,

→ पी.डी. भाटिया के अनुसार उद्देश्यो के समाज से बिना उद्देश्यों के शिक्षक उस नाविक के समान होता है, जो अपनी मंजिल तक कभी नहीं पहुंच पाता है तथा छात्र उस नौका के समान है जो बिना पतवार के लहरों के थपेड़ो से किसी भी किनारे को जा लगती है।

→ राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य तकनीकी प्रशिक्षण के लिए विस्तृत सुविधा प्रदान करना है।

जॉन डी.वी. → उद्देश्य एक पूर्व नियोजित लक्ष्य है जो कि किसी क्रिया को संचालित करता है या करने हेतु प्रेरित करता है

→ भाषा शिक्षण के दो उद्देश्य होते हैं

(i) सामान्य उद्देश्य → भाषा का आधारभूत ज्ञान (उच्चारण क्षमता का विकास उच्चारण के साथ भाव - भंगिमाओं का प्रयोग, उचित गति के साथ उच्चारण

:- विशिष्ट उद्देश्य :-

ज्ञानात्मक उद्देश्य →

भाषा का तात्विक ज्ञान :- ध्वनि - वर्ण - शब्द - वाक्य (संश्लेषण)
वाक्य - शब्द - वर्ण (विश्लेषण)
- व्याकरण की समस्त विधियों का ज्ञान
- हिंदी गद्य की विधियों का तात्विक विश्लेषण
→ एकांकी, नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध

कौशलात्मक उद्देश्य →
- सभी कौशलों का समुचित विकास
- श्रवण (सुनकर) कौशल के साथ अर्थग्रहण करना
- पढ़कर अर्थ ग्रहण करना
- बोलकर विचार अभिव्यक्ति
- लिखकर विचार अभिव्यक्ति के साथ अर्थग्रहण करना।

-: अभिरुचि परक उद्देश्य :-

→ वाचनालय में जाकर नियमित रूप से पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पुस्तके / पत्रिकाएँ / कहानियाँ आदि पढ़ना।

→ गीत / कविता / शायरी / आदि से प्रभावित होकर तुकबंदी करना

→ साहित्य सृजन की ओर अग्रसर होना।

-: अभिवृत्यात्मक उद्देश्य :-

→ अभिवृत्ति - (अभि + वृत्ति (मनोभाव)

→ एक बालक में आदर्शात्मक गुणों का विकास
- बड़ो का सम्मान
- गुरुजनो का आदर
- आस्थावादी दृष्टिकोण
- पाप - पुण्य का ज्ञान
- आस्तिकता व प्रार्थना का ज्ञान

-: सृजनात्मक उद्देश्य :-

→ सृजन - निर्माण

→ यह उद्देश्य गांधीजी के बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत से प्रेरित है।

→ रोजगारोन्मुख शिक्षा
- चित्र बनाना
- रंगोली
- मेहंदी बडेकरना
- लेखन
- अनावश्यक से आवश्यक वस्तु सृजन

:- भाषा शिक्षण के सिद्धांत :-

1. जीवन से सम्बद्धता का सिद्धांत
2. पाठ चयन व विभाजन "
3. स्वाभाविकता "
4. क्रियाशीलता "
5. उल्लास "
6. अनुकरण "
7. वैयक्तिक भिन्नता "
8. अभिप्रेरणा "
9. बाल केंद्रित "
10. नियोजन "
11. उद्देश्य का "
12. जनतंत्रीय व्यवहार "
13. उत्प्रेरणा "
14. मानसिक सक्रियता "
15. मूल्यांकन
16. समवाय "
17. शिक्षण सूत्रों के प्रयोग का "

:- भाषा शिक्षण के सूत्र :-

1. अनिश्चित से निश्चित की ओर
2. सरल से जटिल
3. पूर्ण से अंश
4. ज्ञात से अज्ञात
5. विश्लेषण से संश्लेषण
6. प्रत्यक्ष से प्रत्यक्ष
7. स्थूल से सूक्ष्म
8. विशिष्ट से सामान्य
9. अनोपिज्ञान से तर्क

(शिक्षण के स्तर और उपागम)

1. स्मृति स्तर → छोटी कक्षाओं में बालकों को रखा जाता है
   ↳ हरबर्ट

2. बोध स्तर → सीखे हुए ज्ञान की व्याख्या देना (माध्यमिक स्तर)
   ↳ मॉरीसन

3. चिंतन स्तर → तर्क शक्ति का प्रयोग (उच्च स्तर)
   ↳ हण्ट

हरबर्टीय उपागम विधि :-

- प्रवर्तक - J.F. हरबर्ट
- हरबर्टीय उपागम स्मृति स्तर पर कार्य करता है
- हरबर्ट ने अपने उपागम में मूल रूप से 4 पद दिए :-

(i) स्पष्टता - प्रस्तावना, उद्देश्य कथन (शीर्षक), प्रस्तुतीकरण (पाठ की बातें)
(ii) संबंधता - तुलना व सहयोग
(iii) व्यवस्था - सामान्यीकरण
(iv) विधि - प्रयोग

* दैनिक पाठ योजना का आधार हरबर्टीय उपागम को माना जाता है।
- यह विधि विषय वस्तु आधारित मानी जाती है

NCERT का उपागम →

आदा → शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण करना
प्रक्रिया → निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छात्र - शिक्षक का सक्रिय होना
प्रदा → निर्धारित उद्देश्यों का मूल्यांकन

इस पद्धति के प्रथम चार पद आगमन प्रणाली पर कार्य करते हैं।
" अंतिम पद निगमन प्रणाली "

ब्लूम का मूल्यांकन उपागम →

- जिन उद्देश्यों का हमने निर्धारण किया उनकी प्राप्ति किस स्तर पर हुई इस बात की जानकारी लेना मूल्यांकन कहलाता है

ब्लूम के उपागम के 3 पद माने जाते हैं -

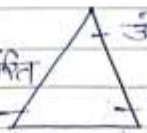

इकाई उपागम →

प्रवर्तक - H.C. मॉरीसन 1920 / समग्रता के सिद्धांत पर

- इकाई विधि सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को विभाजित करके सभी छात्रों को सामूहिक रूप से सिखाने की विधि है

- थॉमस रिस्क → इकाई किसी समस्या/योजना या उससे संबंधित क्रियाओं की एकता को प्रकट करती है।

- H.C. मॉरीसन → इकाई किसी वातावरण, संगठित विज्ञान, कला या आचरण का व्यापक एवं महत्वपूर्ण अंग है जिसे सिखने के फलस्वरूप मानव के व्यक्तित्व में सामंजस्य आता है

- डॉ. वेस्ले व रॉन्स्की → इकाई विधि सिखने वाले के लिए महत्वपूर्ण अनुशीलनों को प्रभावित करने के लिए बनाई गयी संगठित व्यवस्था है

- डॉ. माथुर → इकाई का वास्तविक अर्थ अनुभव या ज्ञान को एक सूत्र में पिरोना है।

- NCERT → इकाई एक निर्देशात्मक युक्ति है जो कि छात्रों को समवेत रूप से ज्ञान प्रदान करती है।

- जेम्स ली → इकाई एक विधि ना होकर किसी संगठन का ढांचा है।

- हेनरी / हैरिस → इकाई किसी विषय का बहुत बड़ा उपविभाग है।

- थॉमस रिस्क ने इकाई उपागम के 3 पद
(i) इकाई की प्रस्तावना
(ii) इकाई का विकास
(iii) इकाईपूर्ति

- मॉरीसन ने 5 पद
(i) खोज / अन्वेषण / जांच कार्य
(ii) प्रस्तुतीकरण
(iii) आत्मीकरण
(iv) सुव्यवस्थीकरण
(v) वाचन / अभिव्यक्तीकरण

- इकाई उपागम एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है इसमें जो अधिगम होता है वह एक व्यवहारशील प्रक्रिया का भाग है इस विधि में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को ध्यान में रखा जाता है उसके बाद इसे छोटे-छोटे भागों में विभक्त करते हैं

- इकाई विधि छात्रों में योजना निर्माण के गुण विकसित करती है
- इकाई विधि पाठ के प्रति छात्रों में रुचि उत्पन्न करती है

<u>दोष</u> →
(i) इकाई विधि में पाठ्यक्रम नियत समय पर पूरा कराना असंभव नहीं है
(ii) सम्पूर्ण विषय वस्तु को एक इकाई में बांटकर पढ़ाना असंभव होता है

- इकाई उपागम को "चक्रीय उपागम" भी कहते हैं।

सूक्ष्म शिक्षण →

प्रवर्तक - एलन
सहयोगी - कीथ एचीसन
भारत में प्रयोग - D.D तीवारी
प्रयोग स्थल - स्टेनफार्ड विश्वविद्यालय
उद्देश्य - एक छात्राध्यापक में शिक्षण के कौशल विकसित करना (एक समय में एक ही कौशल का विकास)

प्रणाली - यह ठीक - ठीक प्रणाली पर कार्य करता है

- सूक्ष्म शिक्षण एक शिक्षण की लघु प्रक्रिया है जो 5-10 छात्रों के समूह को 5-7 मिनट की समयावधि में कौशल विकास का प्रशिक्षण देती है।

→ NCERT (भारत मानदण्डों) के अनुसार एक सूक्ष्म शिक्षण की समयावधि - 36 मिनट

→ एलन / स्टेनफोर्ड विश्व विद्यालय के अनुसार सूक्ष्म शिक्षण की समयावधि - 45 मिनट

→ एलन व इब → सूक्ष्म शिक्षण नियंत्रित अभ्यास का रूप है जिसमें विशिष्ट अध्यापन व्यवहार को नियंत्रित दशाओं में सिखना सम्भव है

- एलन → सूक्ष्म शिक्षण समस्त शिक्षण को लघु क्रियाओ में बाँटना है

B.M. शोर → सूक्ष्म शिक्षण कम अवधि कम छात्र तथा कम शिक्षण की प्रक्रिया है

B.K. पासी → सूक्ष्म शिक्षण एक प्रशिक्षण की तकनीक है जो छात्र अध्यापकों से यह अपेक्षा करती है कि किसी तथ्य को थोड़े से छात्रों को कम समय में विशिष्ट कौशल के माध्यम से ज्ञान प्रदान करती है।

डॉ. बुश ग्रेस → सूक्ष्म शिक्षण एक विकासशील प्रवृत्ति है जिसमें वाक्य अवधि, पाठ्यवस्तु तथा छात्रों की संख्या को कम किया जाता है

एलन → सूक्ष्म शिक्षण प्रशिक्षण का संप्रत्यय है जिसका प्रयोग सेवारत एवं सेवापूर्ण स्थितियों में शिक्षक के व्यवसायिक विकास हेतु किया जाता है

→ एक सूक्ष्म अध्यापन का उद्देश्य छात्र अध्यापक में कौशल विकास करना है

NCERT → हिंदी शिक्षण हेतु 7 प्रकार के कौशल आवश्यक होते हैं
(i) प्रस्तावना कौशल
(ii) सहज प्रश्न कौशल
(iii) खोजपूर्ण प्रश्न कौशल
(iv) उद्दीपन कौशल
(v) व्याख्या कौशल
(vi) पुनर्बलन
(vii) श्यामपट्ट कौशल

सूक्ष्म शिक्षण के पद →
(i) पाठ योजना का निर्माण
(ii) शिक्षण कार्य / सूक्ष्म शिक्षण
(iii) प्रतिपुष्टि / पुनर्बलन
(iv) पुनः पाठ योजना का निर्माण
(v) पुनः शिक्षण कार्य
(vi) पुनः प्रतिपुष्टि

राजस्थान की हर प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी

❖ राजस्थान सामान्य ज्ञान के नोट्स डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए इमेज पर क्लिक करें --

❖ राजस्थान की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण नोट्स Free डाउनलोड :-

❖ राजस्थान कला एवं संस्कृति, भूगोल, इतिहास सभी के नोट्स Free डाउनलोड करने का एकमात्र Google वेबसाइट :- *Rajasthanclasses.in*

Rajasthanclasses.in

हर भर्ती की न्यूज सबसे पहले..

यहां उपलब्ध रहेगी 👇👇

Latest News : Get Link

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए

गूगल सर्च करें या क्लिक करें 👇

Google

rajasthanclasses.in

Telegram चैनल ज्वॉइन करें

YouTube पर ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

Click Here : Get More PDF